Dr. Faheem Hasan
For the students of Sem. II

ब्याज का ऋण-योग्य कोष सिद्धान्त या नव प्रतिष्ठित सिद्धांत (Loanable Funds Theory Or Neo-Classical Theory)

इस सिद्धान्त को उधार देय कोष सिद्धान्त भी कहा जाता है। यह सिद्धान्त सबसे पहले Sweden के अर्थशास्त्री नट विकसेल (Knut Wicksell) द्वारा प्रतिपादित किया गया। Bertil Ohlin, Eric Lindhal और Gunnar Myrdal के द्वारा इस सिद्धान्त का सुधरा हुआ रूप प्रस्तुत किया गया। England में इस सिद्धान्त का विकास Robertson के द्वारा किया गया।

Loanable Funds Theory, Classical Theory के ऊपर एक सुधार है। क्योंकि इसमें ऋण-योग्य कोषों की माँग और पूर्ति शब्दों का प्रयोग अधिक विस्तृत अर्थ में किया गया है। इस सिद्धान्त में ऋण-योग्य कोषों की पूर्ति में केवल वर्तमान आय में से बचत को ही शामिल नहीं किया गया है बल्कि उसमें बैंक सारक, विसंचय तथा अविनियोग भी शामिल हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार ऋण-योग्य कोषों की माँग केवल विनियोग के कारण ही पैदा नहीं होती बल्कि वह धन को इकट्ठा करने की इच्छा के कारण भी होती है।

इस सिद्धान्त के अनुसार ब्याज ऋण-योग्य कोषों या विनियोग योग्य कोषों के लिए दिया जाता है। ब्याज की दर उस बिन्दु पर निर्धारित होती है जहाँ पर ऋण-योग्य कोषों की माँग और ऋण-योग्य कोषों की पूर्ति बराबर होती है।

ऋण-योग्य कोषों की माँग (Demand for Loanable Funds):-

Loanable Funds की माँग के चार प्रमुख स्रोत हैं-

(1) व्यापारियों तथा उत्पादकों के द्वारा माँग (Demand for Traders and Producers):- यह लोग ऋण-योग्य कोषों की माँग विनियोग के उद्देश्यों के लिए करते हैं। उन्हें अपने पूँजीगत उपकरणों के विस्तार तथा उनके सुधार के लिए पूँजी की जरूरत

होती है। वे पूँजीगत उपकरणों को खरीदने के लिए ऋण-योग्य कोषों की माँग करते हैं। वे ब्याज की दर अधिक होने पर कम कोषों की माँग करेंगे तथा ब्याज की दर कम होने पर उनके द्वारा अधिक कोषों की माँग की जाएगी।

(2) उपभोक्ताओं द्वारा माँग (Consumer's Demand for Loanable Funds):- उपभोक्ताओं द्वारा ऋण-योग्य कोषों की माँग उपभोग योग्य टिकाऊ वस्तुओं को खरीदने के लिए की जाती है। यदि वे अपनी आय से अधिक माला में खर्च करने का निश्चय करते हैं तो वे ऋण-योग्य कोषों की माँग करेंगे। ऊँची ब्याज की दर पर उपभोक्ताओं द्वारा कम माला में Loanable Funds की माँग की जायेगी तथा नीची ब्याज की दर पर उनकी अधिक माला में माँग की जायेगी।

(3) सरकारी माँग (Government Demand):- सरकार भी मुद्रा बाजार से रूपया उधार लेती है तथा काफी माला में ऋण-योग्य कोषों की माँग उत्पन्न करती है। नीची ब्याज की दर पर सरकार अधिक माला में ऋण-योग्य कोषों की माँग करती है और ऊँची ब्याज की दर पर माँग कम की जाती है। युद्ध काल, आर्थिक संकट या आर्थिक विकास के काल में सरकार की Loanable Funds की माँग ब्याज की दर से प्रभावित नहीं होती।

(4) संग्रह के लिए माँग (Demand for Hoarding):-

जब लोग ऋण-योग्य कोषों को नकद रूप में रखना चाहते हैं तो उसके कारण भी Loanable Funds की माँग होती है। जब ब्याज की दर कम होती है तो लोग नकद रूप में रखने के लिए अधिक माला में Loanable Funds की माँग करते हैं। ब्याज की दर अधिक होने पर वे कम माला में माँग करते हैं।

Scanned with CamScanner

ऋण-योग्य कोषों की पूर्ति (Supply of Loanable Funds):-

(1) बचतें (Savings):- बचतें Loanable Funds की पूर्ति का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। Robertson के अनुसार लोग अपनी वर्तमान आय में से बचत नहीं करते बल्कि वे अपनी प्रयोग-योग्य आय (disposable income) में से बचत करते हैं, जो पिछली समय-अवधि की आय होती है। ब्याज की दर अधिक होने पर लोग अधिक बचायेंगे तथा कम होने पर उनके द्वारा कम मात्रा में बचत की जायेगी।

(2) बैंक साख (Bank Credit):- बैंक साख Loanable Funds का दूसरा महत्वपूर्ण स्रोत है। बैंक व्यवसायियों को Loanable Funds प्रदान करते हैं क्योंकि उनके द्वारा साख का निर्माण किया जाता है जिसे वे विनियोग के लिए उधार देते हैं।

(3) पिछली बचतों का विसंचय (Dishoarding of Past Savings):- व्यक्ति तथा फर्में अपनी पिछली बचतों में से भी कोष निकाल सकती हैं। विसंचय का परिणाम ऋण-योग्य कोषों की पूर्ति को बढ़ाने का होता है। ऊँची ब्याज की दर पर अधिक मात्रा में विसंचय किया जाता है और नीची ब्याज की दर पर कम मात्रा में विसंचय किया जाता है।

(4) अविनियोग (Disinvestment):- अविनियोग को विनिवेश भी कहते हैं। अविनियोग या विनिवेश का अर्थ यह नहीं है कि उद्योगपति चलता हुआ कारखाना बन्द कर दे लेकिन यदि उद्योग में किसी नयी तकनीक के आ जाने से मशीन पुरानी हो जाये और लाभ की आशाएं अधिक न हों तो उद्योगपति उस उद्योग को नई परिस्थितियों के अनुकूल नहीं बनाता और कारखाने को बेचकर उधार ली गई पूँजी का भुगतान कर देता है। इस स्थिति को विनिवेश कहा जा सकता है। किसी समय बाजार में ब्याज की दर अधिक होती है तो विनिवेश अधिक होता है और ब्याज की दर कम हो तो विनिवेश कम होता है।

ब्याज का निर्धारण (Determination of Interest):-

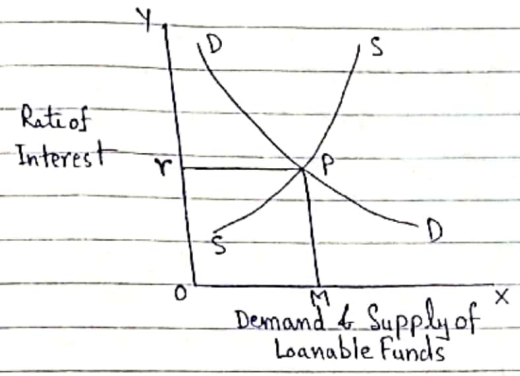

ब्याज की दर उस बिन्दु पर निर्धारित होगी जहां पर ऋण-योग्य कोषों की माँग उनकी पूर्ति के ठीक बराबर होती है। यदि ऋण-योग्य कोषों की माँग और पूर्ति में असन्तुलन होता है तो ब्याज की दर बदल जायेगी और वह अपने सन्तुलन बिन्दु को प्राप्त करने का प्रयत्न करेगी। Diagram में ब्याज दर का निर्धारण बिन्दु P पर करते हुए बाजार ब्याज दर को Or के बराबर निर्धारित करते हैं।

आलोचना (Criticism):-

ऋण-योग्य कोष सिद्धान्त Classical Theory of Interest के ऊपर एक सुधार है लेकिन फिर भी इसकी आलोचना निम्नलिखित आधार पर की गई है—

(1) प्रतिष्ठित सिद्धान्त की तरह यह सिद्धान्त भी आय के स्तर को स्थिर मान लेता है जो ठीक नहीं है। एक प्रगतिशील समाज में आय हमेशा बदलती रहती है और उसका Loanable Funds की Supply पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। Keynes के अनुसार बचत ब्याज की दर पर निर्भर नहीं होती बल्कि वह आय के स्तर के द्वारा निर्धारित होती है। बचत और विनियोग में समानता ब्याज की दर के द्वारा निर्धारित न की जाकर आय के स्तर के द्वारा की जाती है।

(2) यह सिद्धान्त विनियोग के आय पर पड़ने वाले प्रभावों की उपेक्षा करता है। यह सिद्धान्त यह बताता है कि ऊँची ब्याज की दर पर लोग अधिक बचत करते हैं लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता है।

Scanned with CamScanner

ऊँची ब्याज की दर का प्रभाव विनियोग को कम करने का हो सकता है जिससे आय कम हो जायेगी और लोगों द्वारा कम बचत की जायेगी। इस प्रकार ऊँची ब्याज की दर का परिणाम हमेशा बचत को बढ़ाने वाला नहीं होता है। वह विनियोग की मात्रा पर प्रतिकूल प्रभाव डालकर उसे कम भी कर सकती है।

(3) अमरीकी अर्थशास्त्री Prof. Hansen ने बताया कि ऋण-योग्य कोष सिद्धान्त अनिर्धारणीय (indeterminate) है। यह सिद्धान्त स्पष्ट रूप से यह नहीं बताता है कि ब्याज की दर कैसे निर्धारित होती है। इस सिद्धान्त के अनुसार ब्याज की दर Loanable Funds से निर्धारित होती है लेकिन Loanable Funds स्वयं व्यय-योग्य आय (disposable income) पर निर्भर करते हैं। व्यय-योग्य आय खुद निवेश की मात्रा पर निर्भर करती है। निवेश की मात्रा खुद ब्याज की दर पर निर्भर करती है। इसलिए यह सिद्धान्त एक ऐसे चक्र में फंसा देता है जिससे ब्याज दर का निर्धारण नहीं हो सकता।

Scanned with CamScanner